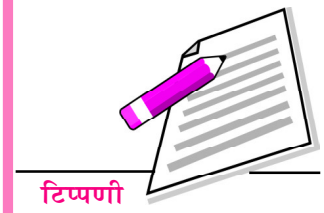

टिप्पणी

7

मुगल सेना के युद्ध

पिछले पाठ में आपने उन कारकों के बारे में पढ़ा जिन्होंने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त मुगल सेना के संगठन, युद्ध से संबंधित उपकरणों और हथियारों के बारे में जानकारी प्राप्त की। आप ने यह भी जाना कि मुगल तोपखाना युद्ध का एक नया हथियार था और शत्रुओं को भयभीत करता था। युद्धों को जीताने तथा मुगल साम्राज्य को स्थापित करने और विस्तार देने में बारूद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस पाठ में आप बाबर द्वारा लड़े गए तीन महत्वपूर्ण युद्धों का अध्ययन करेंगे जिसने भारत में मुगल शासन की ठोस बुनियाद रखी। पानीपत (हरियाणा में स्थित एक शहर) को 300 वर्षों तक भारतीय इतिहास की एक धुरी के रूप में जाना जाता है और इसकी कहानी 1526 में होने वाले पहले बड़े युद्ध के साथ आरंभ होती है। पानीपत की विजय महत्वपूर्ण तो थी लेकिन बाबर के लिए यह आराम से बैठने और लंबे समय तक इसका लाभ उठाने के लिए पर्याप्त नहीं थी क्योंकि मेवाड़ के शक्तिशाली शासक राणा सांगा की चुनौती शेष थी। उसका क्षेत्र हिन्दुस्तान में आता था। दिल्ली पर कब्जा करने के बाद बाबर केवल चार वर्ष जीवित रहा। उसके बेटे हुमायूं और पौत्र अकबर ने बाबर के देहांत के बाद मुगल साम्राज्य को मजबूती प्रदान करना जारी रखा।

मुगलों का प्रभाव यद्यपि अकबर के समय अपने चरम पर था परंतु इसकी बुनियाद अकबर के दादा ने ही रखी थी।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- पानीपत की पहली लड़ाई तथा मुगलों की युद्ध रणनीति की व्याख्या कर सकेंगे;
- मुगल साम्राज्य के प्रारंभिक वर्षों के दौरान विद्यमान सत्ता संघर्ष पर चर्चा कर सकेंगे।

7.1 पानीपत का प्रथम युद्ध

पानीपत का प्रथम युद्ध 1526 को बाबर की आक्रमणकारी फौजों और दिल्ली सल्तनत के आखिरी सुल्तान इब्राहिम लोधी के मध्य हुआ था। यह युद्ध पानीपत (हरियाणा) में लड़ा गया और इसे मुगल साम्राज्य का प्रारंभ माना जाता है। इस युद्ध का महत्व यह था कि यह भारत में लड़ी गई प्राचीनतम लड़ाइयों में से एक थी जिसमें बन्दूकों तथा तोपों के रूप में बारूद का उपयोग किया गया था।

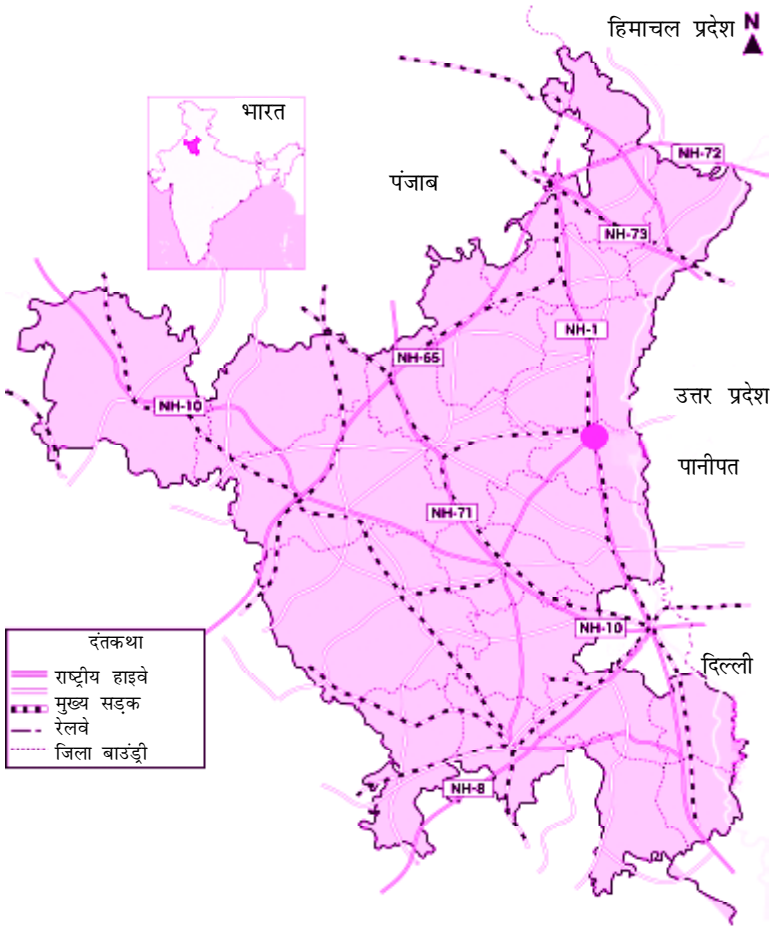

मानचित्र 7.1 : पानीपत का युद्ध

7.1.1 युद्ध के कारण

इब्राहिम लोधी, लोधीवंश का अंतिम शासक था जिसने शाही अधिकार को बढ़ाने का प्रयास किया और अपने नागरिकों पर निरंकुश शक्ति रखने का प्रयास किया।

वह क्रूर था और लोग उससे नफरत करते थे। इस कारण पंजाब के गवर्नर, दौलत खान लोधी ने बाबर को आक्रमण करने का निमंत्रण दिया। बाबर ने निमंत्रण स्वीकार करते हुए लोधी को पानीपत के प्रथम युद्ध में पराजित कर दिया। इस युद्ध में इब्राहिम लोधी मारा गया और लोधी वंश का पतन हो गया।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. पानीपत के युद्ध का क्या महत्व है?
2. दौलत खान ने बाबर को आक्रमण करने के लिए क्यों आमंत्रित किया?

7.1.2 पानीपत के प्रथम युद्ध की सैन्य तकनीक

अनुमानत: बाबर के पास लगभग 15,000 व्यक्तियों की सेना थी जबकि इब्राहिम लोधी 100,000 सिपाहियों का स्वामी था। इसका मतलब संख्या बल में इब्राहिम लोधी आगे था। बाबर की सेना में तुर्क, मंगोल, ईरानी तथा अफगानी थे। इनके पास घुड़सवार तथा बारूद भी था। बाबर के पास तोड़ेदार बंदूक व तोप भी थी। लोधी के पास हाथी तथा घुड़सवार के अलावा पैदल सेना थी। युद्ध में विजय सैन्य नीति और दांव पर आधारित थी।

तोड़ेदार (मैचलॉक) बंदूक क्या होती है?

यह उपकरण बारूद को जलाने के लिए प्रयुक्त होता है। 15वीं शताब्दी में मुगल इस तकनीक को भारत में लाए तथा इसका प्रथम प्रयोग पानीपत के प्रथम युद्ध में किया।

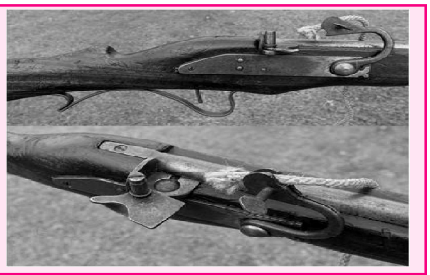

चित्र 7.1 : तोड़ेदार (मैचलॉक) बंदूक

तुलुगमा तथा अरबा तकनीक को लागू करके बाबर ने यह युद्ध जीत लिया। तुलुगमा एक ऐसी तकनीक है जिसमें पूरी सेना को छोटे भागों में बांटकर तीन दिशाओं में (मध्य, दायीं व बायीं) तरफ रखा जाता है। अरबा में रथों को दुश्मन की तरफ मुंह करके खड़ा किया जाता है और ये सभी रथ एक-दूसरे के साथ रस्सी से बंधे होते थे।

बाबर ने दायीं व बायीं सेना को अगले और पिछले हिस्से में बांट दिया था। बाबर की सेना संख्या में कम थी इसलिए उसने उसे बांटकर लोधी सेना की घेराबंदी की। रथों के पीछे तोपें थी जिन्हें परकोटे पर रखकर युद्ध में आसानी से प्रयोग किया जा सकता था।

इन्हीं दो तकनीकों के कारण बाबर सेना की तोपें खतरनाक हो गई थीं। तोपों का प्रयोग बिना किसी डर किसी भी दिशा में किया जा सकता था क्योंकि वे रस्सियों के द्वारा ठीक स्थान पर बंधी होती थी। तथा इनसे नया निशाना लगाना आसान था। पहियों पर स्थित होने के कारण तोपें आसानी से दिशा परिवर्तन कर सकती थी।

बाबर की तकनीक दो सैन्य प्रणालियों ऑटमन तथा मंगोल का मिश्रित रूप थी। बैलगाड़ियों के उपयोग से वह अपनी पैदल सेना की कृत्रिम सुरक्षा कर पाया।

दूसरी तरफ इब्राहिम लोधी अपनी हाथी सेना और घुड़सवार सेना पर निर्भर था। उसकी पैदल सेना पूरी तरह तैयार नहीं थी। पश्तून जनजाति के लोग या धनुर्धर ही पैदल सेना में शामिल थे। इब्राहिम लोधी की सेना पांच भागों में विभाजित थी- मुख्य सेना, दायीं सेना, बायीं सेना, मध्य तथा पीछे की सेना। लोधी सेना मूल रूप से हाथी तथा घुड़सवारों की प्रहार शक्ति पर निर्भर थी।

बाबर की सेना ने बारूद का प्रभावी प्रयोग किया। बाबर ऑटमन साम्राज्य से जो बंदूकधारी लेकर आए थे उन्होंने पीछे व बगल से लोधी की सेना पर आक्रमण किया। इस युद्ध में हजारों लोग मारे गए। तीन घंटे से भी कम समय में लोधी मारा गया और दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया।

परिणाम- पानीपत के पहले युद्ध में बाबर की सेना की जीत से मध्यकालीन भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना हो गयी। बाबर को मुगल शासन को सुदृढ़ करने के लिए अन्य कई युद्ध लड़ने पड़े जिनमें खानवा का युद्ध प्रमुख है जो मेवाड़ के राणा सांगा के विरुद्ध लड़ा गया।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. तुलुगमा और अरबा से क्या अभिप्राय है?
2. पानीपत के प्रथम युद्ध का क्या परिणाम था?

7.2 मुगल शासन के प्रारंभिक वर्षों में हुए युद्ध

जब मुगलों का दिल्ली पर शासन था तब भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में राजपूत शासन कर रहे थे। 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में राणा सांगा (राणा संग्राम सिंह) का शासन अति शक्तिशाली था। वह दक्षिण राजस्थान में मेवाड़ का राजा था और अपने अनेक पड़ोसी राजपूत राजाओं को विदेशी आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए संगठित और एकत्रित करने में सक्षम था। यद्यपि खानवा के युद्ध में बाबर ने उसे हरा दिया और राजपूतों की संगठित गरिमा को चोट पहुंची। राणा सांगा राजस्थान के उस दौर से है जब राजपूतों को बहादुर योद्धाओं के रूप में देखा जाता है अत: यहां पर राणा सांगा को संक्षेप में प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है। राणा सांगा ने बाबर के साथ तीन मुख्य युद्ध लड़े।

मेवाड़ के राणा सांगा

महाराणा संग्राम सिंह (12 अप्रैल 1484 - 17 मार्च 1527) को इतिहास में राणा सांगा के नाम से जाना जाता है। वह मेवाड़ का शासक था। मेवाड़ वर्तमान राजस्थान में आता है। राणा सांगा ने 1509 से 1527 तक शासन किया।

राणा सांगा अपने पिता राणा रायमल के स्थान पर मेवाड़ का शासक बना। उत्तराधिकारी बनने के लिए उसे अपने भाइयों से युद्ध लड़ना पड़ा। सत्ता हासिल करने के बाद खुद को मजबूत करने के लिए सांगा ने मालवा पर आक्रमण किया। जो सुल्तान महमूद खिलजी और राजपूत वजीर मेदिनी राव के बीच आंतरिक मतभेद के कारण कमजोर था।

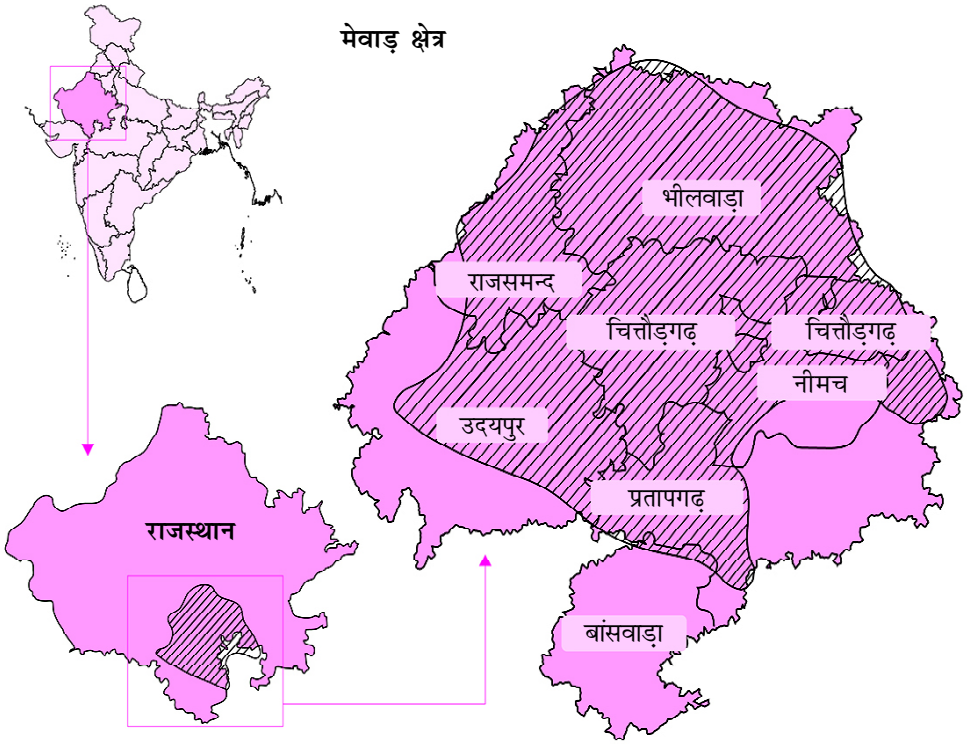

चित्र 7.2 (मेवाड़ क्षेत्र)

राणा सांगा मालवा पर विजय के बाद शक्तिशाली राजा बन गया। उत्तर-पूर्वी राजस्थान में वह अपने राज्य का विस्तार करना चाहता था जो खिलजी के सहयोगी लोधी के अधीन था। सांगा ने आक्रमण करके रणथम्भोर के किले पर कब्जा कर लिया।

वहां का शासक लोधी का करीबी था। लोधी ने मेवाड़ पर आक्रमण करके बदला लेने की ठानी। लोधी के अफगानों के लिए राणा सांगा की सेना बहुत मजबूत साबित हुई खातौली के युद्ध में राणा सांगा इब्राहिम लोधी के विरुद्ध बहादुरी से लड़ा। इस युद्ध में सांगा ने तीर लगने के कारण बाजू खो दिया किन्तु उसने अपना हौसला नहीं टूटने दिया।

इसके बाद धौलपुर के युद्ध में राणा सांगा ने इब्राहिम लोधी को परास्त करके वर्तमान राजस्थान के अधिकतर हिस्से पर कब्जा जमा लिया।

भारत में एक शक्तिशाली शासक के रूप में अपनी बढ़ती हैसियत के साथ उसका उत्साह बहुत बढ़ गया था और राणा सांगा ने दिल्ली पर अधिकार करने की योजना बनाई। वह पूरे भारत वर्ष पर अपना शासन स्थापित करना चाहता था।

7.2.1 खानवा का युद्ध

आरंभ में राणा सांगा की यह धारणा थी कि बाबर भारत छोड़कर चला जाएगा। परंतु वह यह जानकर हैरान रह गया कि बाबर दिल्ली के आस-पास अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करना चाहता था। इसलिए राणा सांगा ने बाबर के विरुद्ध युद्ध करने का फैसला कर लिया।

प्रथम चरण में राणा सांगा ने अफगानी भगौड़ा राजकुमार महमूद लोधी तथा हसन खां मेवाती को अपने साथ मिलाया और तब बाबर को भारत छोड़ने का आदेश दिया।

जब राणा सांगा और बाबर की सेनाओं का खानवा के मैदान में 16 मार्च, 1527 को आमना-सामना हुआ; जो फतेहपुर सीकरी के पास एक स्थान है, तो वहां भयंकर युद्ध हुआ जिसका परिणाम मौत और तबाही के रूप में निकला। राजपूतों ने बाबर को घेर लिया था किन्तु बाबर की सैन्य तकनीक ने उसे जीत दिलवा दी।

इस जीत का श्रेय बाबर की सैन्य तकनीक को जाता है। युद्ध से पहले बाबर ने मैदान का निरीक्षण कर योजना बनाई। पानीपत के युद्ध की तरह उसने लोहे की जंजीर से बंधे रथों को सुरक्षित करके अपने अगले मोर्चे को मजबूत बनाया। घोड़ों के लिए छाया तथा बारूद छिपाने का भी प्रबंध था। रथों के बीच के स्थान पर दुश्मन पर वार करने के लिए हथियार छुपाए हुए थे। खाइयां खोदकर सेना को सुरक्षा प्रदान की गई थी।

नियमित बल के अलावा, छोटी टुकड़ी को तुलुगमा रणनीति के लिए बाईं ओर और सामने रखा गया था। तुलुगमा के आधार पर छोटी टुकड़ियां बनायी गयी। बाबर द्वारा आक्रमण तथा बचाव की सुदृढ़ नीति बनाई गई थी।

राणा सांगा ने युद्ध को परंपरागत रूप से लड़ा। राणा सांगा को आराम का समय ही नहीं दिया गया। बाबर के रथ वाहन तथा तोप खाने राजपूतों को कुचलते हुए आगे बढ़े। यह युद्ध 10 घंटे से भी कम समय में खत्म हो गया था। युद्ध के मध्य सिलहदी फौज के पाला बदलने से राजपूत सेना में भ्रम पैदा हो गया। राणा सांगा जब अपने मोर्चे को पुनः मजबूत करने का प्रयास कर रहा था तब वह चोटिल हो गया और बेहोश होकर घोड़े से गिर गया। राजपूत सेना को लगा कि उसकी मृत्यु हो गयी और वे बिखर गए। इस प्रकार मुगल सेना ने विजय प्राप्त की।

राणा सांगा संख्या बल के आधार पर बाबर से आगे थे किन्तु तकनीक में वह बाबर को पछाड़ न सके। बाबर ने सेना का उचित प्रयोग किया। बाबर की सेना ने इस विजय के साथ मुगलों के शासन को भारत में स्थापित कर दिया। इस युद्ध के बाद राजपूत कभी भी मुगलों का सामना नहीं कर पाए।

खानवा के युद्ध ने बाबर को दिल्ली का सम्राट बना दिया। इसके पश्चात् बाबर ने दिल्ली में अपनी स्थिति मजबूत कर ली।

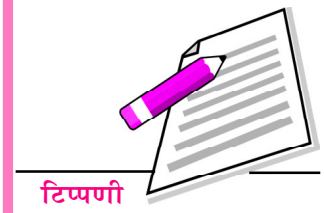

7.2.2 चंदेरी का युद्ध

चंदेरी एक मुस्लिम राज्य था जिसे राणा सांगा ने इब्राहिम लोधी से जीता था। बाद में यह राज्य मोहम्मद खिलजी के प्रधानमंत्री मेदिनी राय को दिया गया था। मेदिनी राय सांगा की सेना का एक कुशल सेनापति था। उसने सुल्तान के खिलाफ अनेक अवसरों पर राणा सांगा की मदद की। खानवा के युद्ध में वह सांगा की ओर से शामिल हुआ था। इस युद्ध के पश्चात् बाबर ने चंदेरी पर आक्रमण करने की योजना बनाई। युद्ध के बाद मेदिनी चंदेरी लौट आया, परंतु बाबर ने चंदेरी को अगला लक्ष्य बनाया।

चंदेरी एक दीवार से घिरा हुआ कस्बा था। किला या गढ़ ऊंची चोटी पर था जहां की जलापूर्ति पहाड़ के नीचे से होती थी। इसके दोनों ओर दीवारें खड़ी थी। यहां बाबर का तोपखाना कम सफल हो रहा था। दीवार की ऊंचाई अधिक होने के कारण बाबर की सेना ने गारे से टीला बनाना प्रारंभ किया। शेष सेना ने सीढ़ी तथा कोटों का निर्माण किया। बाबर का अगला कदम आरिश खान को दूत बनाकर मेदिनी राय के पास भेजना था। बाबर का प्रस्ताव था कि यदि राय समर्पण कर दे तो उसे शमशाबाद का शासक बना दिया जाएगा। अन्यथा युद्ध में मारा जाएगा। मेदिनी ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।

बाबर की रणनीतिक योजना से चंदेरी के सैनिकों को स्पष्ट हो गया था कि हार बहुत करीब है। इस क्षण उन्होंने जौहर की रीति से अपनी महिलाओं की मृत्यु के बाद मुगलों पर एक अंतिम आक्रमण किया। कस्बा इतनी जल्दी ढह गया कि बाबर को युद्ध में भाग लेने का मौका भी नहीं मिला।

चंदेरी के युद्ध के बाद किसी भी राजपूत राजा ने बाबर की शक्ति को चुनौती नहीं दी।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. खानवा के युद्ध में आमने-सामने कौन-से विरोधी थे।
2. खानवा युद्ध के क्या परिणाम थे?

आपने क्या सीखा

- बाबर ने लोधी वंश को हराकर मुगल साम्राज्य की नींव डाली। उसने पानीपत के पहले युद्ध में लोधी वंश के शासक को पराजित किया था।
- मुगल साम्राज्य को पानीपत में प्रशासनिक तथा सैन्य दृष्टि से राजपूतों से खतरा था।
- इब्राहिम लोधी ने मेवाड़ के राजपूतों को अपने अधीन करने की कई असफल कोशिशें कीं।
- खानवा के युद्ध से वह राजपूतों को एक बड़ी क्षति पहुंचाया।

- इसके पश्चात चंदेरी के युद्ध ने राजपूतों की कमर तोड़कर बाबर के मुगल साम्राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

पाठांत प्रश्न

1. पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर द्वारा कौन-सी सैन्य तकनीकों का प्रयोग किया गया?
2. चंदेरी के युद्ध में बाबर के द्वारा प्रयुक्त सैन्य तकनीक की विवेचना कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. भारत में यह पहला युद्ध था जिसमें बारूद, गोले तथा फील्ड तोपें प्रयुक्त हुई।
2. इब्राहिम लोधी के क्रूर शासन काल में प्रजा में असंतोष था। दौलत खां (पंजाब के गर्वनर) ने बाबर को आक्रमण करने का निमंत्रण दिया।

7.2

1. तुलुगमा ऐसी तकनीक है जिसमें पूरी सेना को छोटे-छोटे भागों में बांटा जाता था। जो दायीं, बायीं तथा मध्य में तैनात होते था। अरबा में रथों को आपस में जोड़कर दुश्मन के सामने खड़ा किया जाता था और इन रथों को आपस में रस्सी से बांधा जाता था।
2. मुगल साम्राज्य की स्थापना

7.3

1. बाबर व मेवाड़ के राणा सांगा
2. बाबर ने युद्ध जीता।